19/01/22

कार्ल मार्क्स का सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धान्त (Theory of Social Stratification of Karl Marks)

कार्ल मार्क्स ने अपने वर्ग संघर्ष की विचारधारा के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपनी पुस्तक साम्यवादी घोषणा पत्र (Communist Manifesto) में लिखा है.. "आज तक अस्तित्व में रहे समाजों का इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास है।" अर्थात प्रत्येक काल में वर्ग रहे हैं और उनके बीच निरन्तर संघर्ष रहा है। स्वतंत्र लोग व दास कुलीन व अकुलीन सामन्त और अर्द्ध दास शासक व शोषित ये सभी वर्ग विभिन्न कालों में रहे हैं। मार्क्स के वर्ग का विचार समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता के फलस्वरूप स्तरीकरण पर आधारित है। मार्क्स का विचार है कि विभिन्न समाजों के इतिहास में मनुष्य को प्रेरणा देने वाली सबसे बड़ी शक्ति मनुष्य के रहने का एक विशेष ढंग है। मार्क्स का कथन है कि जिस प्रकार जीवित रहने के लिए भोजन करना अनिवार्य है उसी प्रकार व्यक्ति जिस ढंग से जीविका उपार्जित करता है उसका मस्तिष्क भी वैसा ही बन जाता है। इसका अर्थ यह है कि जीविका उपार्जित करने के ढंग में होने

वाले परिवर्तन समाज में परिवर्तन की इच्छा उत्पन्न करता है। उनका विचार है कि सामाजिक असमानता अथवा दूसरे शब्दों में सामाजिक स्तरीकरण एक स्वाभाविक घटना नहीं है। यदि सभी व्यक्तियों का सभी वस्तुओं पर अधिकार हो सकता है और जो व्यक्ति जिस भूमि पर कार्य करता है, वह भूमि उसी के अधिकार में होती है तो उत्पादन की प्रक्रियों का वितरण थोड़े-थोड़े अपने आप समान हो जाता है लेकिन समाज में जब थोड़े से व्यक्तियों का ही भूमि पर अधिकार हो जाता है अथवा उत्पादन साधनों पर अधिकार होने से श्रम-शक्ति उनके अधीन हो जाती है तो इससे सामाजिक असमानता का जन्म होता है।

वास्तविकता यह है कि अधिकांश समाजों में सर्वहारा वर्ग के पास न तो अपने उपकरण होते हैं, और न ही उन्हें उत्पादन की दूसरे साधनों जैसे - कच्चा माल पूंजी अथवा प्राकृतिक साधनों की सुविधाएँ मिल पाती है। इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें जीवित रहने के लिए अपनी सम्पत्ति और श्रम को बेचना पड़ता है। जबकि मालिक वर्ग उनकी सम्पत्ति और

मशीनों की सहायता से अधिक से अधिक धन एकत्रित करता है और बड़े लाभ को प्राप्त करने लगता है। इसके परिणाम स्वरूप समाज में आर्थिक साधनों के आधार पर अनेक वर्गों का निर्माण होता है। इनमें से प्रत्येक वर्ग को जीवन में विकास करने के पर्याप्त अवसर भिन्न-भिन्न मात्रा में प्राप्त होते हैं। कुछ समय बाद यह अन्तर केवल आर्थिक साधनों का ही नहीं रह जाता बल्कि उनको मिलने वाली अन्य सुविधाएँ भी इसी के अनुपात में निर्धारित होने लगती हैं। इसके फलस्वरूप मालिक वर्ग या बुर्जुआ वर्ग को राजनीतिक शक्ति मिल जाती है और कानूनी साहित्य तथा विज्ञान पर उसका नियंत्रण स्थापित हो जाता है जबकि दूसरी ओर यह स्थिति सर्वहारा वर्ग की दशा को और अधिक गिरा देती है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण दशाओं के फलस्वरूप प्रत्येक वर्ग के अन्दर एक विशेष वर्ग चेतना का विकास होता है क्योंकि बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग के सम्बन्धों से शोषण में वृद्धि होती है इसलिए प्रत्येक वर्ग पारस्परिक संघर्ष के द्वारा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की कोशिश करने लगता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्तरीकरण का

वास्तविक कारण विभिन्न वर्गों के बीच सम्पत्ति और साधनों की असमानता होना और इसके फलस्वरूप इनके बीच होने वाला संघर्ष है। मार्क्स का कथन है कि मानव समाज का सम्पूर्ण इतिहास वास्तव में वर्ग संघर्ष का ही इतिहास है। इसका कारण है कि प्रत्येक समाज में सामाजिक असमानता को प्रोत्साहन मिलता रहा है जिसके फलस्वरूप समाज में स्तरीकरण की व्यवस्था बनी रहती है।

DR Vijant Kumar Mishra
Asst Professor (Guest Faculty)
Dept of Sociology
19/05/22

Dated - 02/05/2020